International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सिंधु घाटी सभ्यता का समकालीन सभ्यताओं से संपर्क: तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में अंतर-सभ्यता संपर्क के लिए पुरातात्विक और शाब्दिक साक्ष्यों का विश्लेषण

अजीत सिंह

सार

यह शोध पत्र कांस्य युग के दौरान सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) और उसकी समकालीन वैश्विक सभ्यताओं के बीच संपर्क के पुरातात्विक और शाब्दिक साक्ष्यों का एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परिपक्व हड़प्पा काल (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व) पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह अध्ययन मेसोपोटामिया, फारस की खाड़ी की राजव्यवस्थाओं (दिलमुन और मागन), और बैक्ट्रिया-मारजियाना पुरातात्विक परिसर (BMAC) के साथ सिंधु घाटी के संबंधों की प्रकृति, दिशा और विकास की जांच करता है। पुरातात्विक कलाकृतियों, जैसे कि मुहरों, मनकों और मिट्टी के बर्तनों, और कीलाक्षर ग्रंथों के संश्लेषण के माध्यम से, यह पत्र तर्क देता है कि सिंधु घाटी सभ्यता एक पृथक इकाई नहीं थी, बल्कि तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के एक विशाल अंतःक्रिया क्षेत्र के भीतर एक महत्वपूर्ण, गतिशील और काफी हद तक आत्मनिर्भर केंद्र थी। साक्ष्य एक ऐसे पैटर्न को प्रकट करते हैं जिसमें हड़प्पा उद्यम द्वारा संचालित समुद्री व्यापार का प्रभुत्व था, जो मेसोपोटामिया और खाड़ी में कच्चे माल और विलासिता की वस्तुओं की आपूर्ति करता था, जबकि मध्य एशिया में अपने उत्तरी पड़ोसियों के साथ अधिक पारस्परिक आदान-प्रदान में संलग्न था। संपर्क की विषम प्रकृति, जिसमें सिंधु घाटी में विदेशी कलाकृतियों की उल्लेखनीय कमी है, एक मजबूत सांस्कृतिक विचारधारा और आर्थिक आत्मनिर्भरता को इंगित करती है जो सिंधु सभ्यता को अपने समकालीनों से अलग करती है।

1. परिचय: कांस्य युग की विश्व प्रणाली

1.1. सिंधु घाटी सभ्यता को स्थापित करना (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व)

सिंधु घाटी सभ्यता, जिसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन विश्व की महान नदी घाटी सभ्यताओं में से एक के रूप में खड़ी है [1]। इसका परिपक्व या शहरी चरण, लगभग 2600 से 1900 ईसा पूर्व तक फैला हुआ है, जो इस अध्ययन का केंद्र बिंदु है, और यह इसे मिस्र के पुराने साम्राज्य, मेसोपोटामिया के प्रारंभिक राजवंश से उर III काल और बैक्ट्रिया-मारजियाना पुरातात्विक परिसर (BMAC) के उदय के समकालीन बनाता है [1]। यह सभ्यता एक विशाल भौगोलिक क्षेत्र में फैली हुई थी, जिसमें आधुनिक पाकिस्तान, उत्तर-पश्चिमी भारत और पूर्वोत्तर अफगानिस्तान के कुछ हिस्से शामिल थे, जो इसे अपनी समकालीन सभ्यताओं में सबसे व्यापक बनाता है [1]।

सिंधु सभ्यता की पहचान इसकी उल्लेखनीय विशेषताओं से होती है। इसके शहर, जैसे कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा, अपनी परिष्कृत शहरी योजना के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें ग्रिड-आधारित लेआउट, पकी हुई ईंटों का मानकीकृत उपयोग, विस्तृत जल निकासी प्रणालियाँ और बड़े गैर-आवासीय भवन शामिल हैं [3]। इन शहरी केंद्रों ने बड़ी आबादी का समर्थन किया; मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में 30,000 से 60,000 के बीच व्यक्ति रह सकते थे [1]। इस सभ्यता ने एक अनूठी और अभी तक न पढ़ी जा सकी लिपि विकसित की, जो मुख्य रूप से स्टेटाइट (सेलखड़ी) से बनी छोटी वर्गाकार मुहरों पर पाई जाती है [6]। इसकी भौतिक संस्कृति भी उतनी ही विशिष्ट थी, जिसमें मानकीकृत वजन, लंबे

बैरल कोरेलियन मनके और विशिष्ट मिट्टी के बर्तन शामिल थे, जो उच्च स्तर के शिल्प कौशल और मानकीकरण का संकेत देते हैं [1]। यह सभ्यता स्थानीय पूर्ववर्ती संस्कृतियों (प्रारंभिक हड़प्पा) से विकसित हुई, जो इसके स्वदेशी विकास को रेखांकित करती है [4]।

1.2. समकालीन परिदृश्य

सिंधु घाटी सभ्यता के वैश्विक संबंधों को समझने के लिए, इसके प्रमुख समकालीन राजव्यवस्थाओं के कालानुक्रमिक ढांचे को स्थापित करना आवश्यक है।

- **मेसोपोटामिया:** सिंधु सभ्यता के साथ सबसे गहन संपर्क के काल प्रारंभिक राजवंश III (ED III, लगभग 2600-2350 ईसा पूर्व), अक्कदी साम्राज्य (लगभग 2334–2154 ईसा पूर्व), और उर का तीसरा राजवंश (उर III, लगभग 2112–2004 ईसा पूर्व) के दौरान हुए [10]। अक्कद और उर III के तहत राजनीतिक केंद्रीकरण ने लंबी दूरी के व्यापार को संरचित और तीव्र किया होगा, जिससे सिंधु माल की मांग पैदा हुई।
- **मिस्र:** प्रासंगिक काल पुराने साम्राज्य (लगभग 2686-2181 ईसा पूर्व) और प्रथम मध्यवर्ती काल (लगभग 2181-2040 ईसा पूर्व) हैं [15]। जैसा कि विश्लेषण दिखाएगा, मिस्र के साथ संपर्क प्रत्यक्ष नहीं था, बल्कि मेसोपोटामिया और लेवेंट के माध्यम से अप्रत्यक्ष था।
- **बैक्ट्रिया-मारजियाना पुरातात्विक परिसर (BMAC):** लगभग 2250-1700 ईसा पूर्व के दौरान मध्य एशिया (तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान) के नखलिस्तानों में फलता-फूलता, BMAC स्मारकीय वास्तुकला और विशिष्ट शिल्पों के साथ एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरा। यह सिंधु घाटी सभ्यता का एक महत्वपूर्ण उत्तरी पड़ोसी था, जो भूमि-आधारित व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था [12]।
- **खाड़ी राजव्यवस्थाएँ: दिलमुन** (आधुनिक बहरीन, फेलका) की भूमिका एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में और **मागन** (आधुनिक ओमान) की तांबे के स्रोत के रूप में सिंधु समुद्री नेटवर्क के लिए महत्वपूर्ण थी [22]।

इन विशिष्ट शहरी सभ्यताओं का लगभग एक साथ फलना-फूलना एक "बहुध्रुवीय" कांस्य युग की दुनिया का निर्माण करता है, जहाँ कोई एक शक्ति हावी नहीं थी। इस वातावरण ने सरल शाही-परिधीय संबंधों के बजाय जटिल, नेटवर्क-आधारित अंतःक्रियाओं को बढ़ावा दिया। कालानुक्रमिक डेटा से पता चलता है कि परिपक्व हड़प्पा काल सीधे मेसोपोटामिया के ED III, अक्कदी और उर III काल; मिस्र के पुराने साम्राज्य और प्रथम मध्यवर्ती काल; और BMAC के उदय के साथ मेल खाता है [1]। प्रत्येक क्षेत्र ने अद्वितीय, अत्यधिक परिष्कृत सांस्कृतिक लक्षण विकसित किए: मेसोपोटामिया में कीलाक्षर और ज़िगगुराट [26], मिस्र में पिरामिड और चित्रलिपि [27], BMAC में किलेबंद नखलिस्तान [20], और IVC में एक अपठित लिपि के साथ नियोजित शहर [3]। व्यापार के साक्ष्य इन केंद्रों के बीच माल के प्रवाह को दर्शाते हैं, न कि केवल एक साम्राज्य द्वारा संसाधनों का एकतरफा निष्कर्षण। यह जटिल अंतःक्रियात्मक वेब, जहाँ विभिन्न राजव्यवस्थाएँ उत्पादकों, उपभोक्ताओं और मध्यस्थों के रूप में कार्य करती हैं, एक नेटवर्क की विशेषता है, न कि एक साधारण कोर-परिधि मॉडल की। इसने सिंधु घाटी सभ्यता और दिलमुन जैसी राजव्यवस्थाओं को विशेष आर्थिक भूमिकाएँ निभाने की अनुमति दी।

तालिका 1: प्रमुख कांस्य युगीन सभ्यताओं का कालानुक्रमिक सहसंबंध (लगभग 3000-1700 ईसा पूर्व)

तिथियाँ (ईसा पूर्व)	सिंधु घाटी (चरण)	मेसोपोटामिया (काल/राजवंश)	मिस्र (साम्राज्य/काल)	मध्य एशिया/खाड़ी (प्रमुख संस्कृतियाँ)
3000–2600	प्रारंभिक हड़प्पा	प्रारंभिक राजवंश I-II	प्रारंभिक राजवंश	जेमडेट नस्र

2600–2500	परिपक्व हड़प्पा	प्रारंभिक राजवंश IIIa	पुराना साम्राज्य (चौथा राजवंश)	
2500–2350	परिपक्व हड़प्पा	प्रारंभिक राजवंश IIIb	पुराना साम्राज्य (5वाँ राजवंश)	मागन का उदय
2350–2200	परिपक्व हड़प्पा	अक्कदी साम्राज्य	पुराना साम्राज्य (6वाँ राजवंश)	BMAC का उदय (लगभग 2250)
2200–2100	परिपक्व हड़प्पा	गुटियन/उर III का उदय	प्रथम मध्यवर्ती काल	BMAC / दिलमुन व्यापार
2100–2000	परिपक्व हड़प्पा	उर III राजवंश	प्रथम मध्यवर्ती काल	BMAC / दिलमुन व्यापार
2000–1900	परिपक्व हड़प्पा	इसिन-लारसा काल	मध्य साम्राज्य (11वाँ/12वाँ राजवंश)	दिलमुन मध्यस्थ
1900–1700	उत्तर हड़प्पा	इसिन-लारसा/पुराना बेबीलोनियन	मध्य साम्राज्य (12वाँ/13वाँ राजवंश)	BMAC का पतन (लगभग 1700)

1.3. शोध-प्रबंध कथन

यह पत्र तर्क देगा कि सिंधु घाटी सभ्यता एक पृथक इकाई नहीं थी, बल्कि तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंतःक्रिया क्षेत्रों के एक विशाल नेटवर्क के भीतर एक महत्वपूर्ण, गतिशील और काफी हद तक आत्मनिर्भर केंद्र थी। यह नेटवर्क जटिल और विविध संबंधों की विशेषता थी, जिसमें प्रत्यक्ष समुद्री व्यापार और औपनिवेशिक चौकियों से लेकर प्रवासी समुदायों और अप्रत्यक्ष सांस्कृतिक प्रसार तक शामिल थे। पुरातात्विक और शाब्दिक साक्ष्यों के समृद्ध लेकिन विषम रूप से वितरित निकाय का विश्लेषण अंतःक्रिया के एक ऐसे पैटर्न को प्रकट करता है जो काफी हद तक हड़प्पा उद्यम द्वारा संचालित था, जो मेसोपोटामिया और खाड़ी को कच्चे माल और विलासिता की वस्तुओं की आपूर्ति करता था, जबकि BMAC में अपने उत्तरी पड़ोसियों के साथ अधिक पारस्परिक आदान-प्रदान में संलग्न था।

2. मेसोपोटामियाई संबंध: 'मेलुहा' को समझना

सिंधु घाटी और मेसोपोटामिया के बीच संबंध कांस्य युग के अंतर-सभ्यता संपर्क का सबसे अच्छी तरह से प्रलेखित उदाहरण है, जो शाब्दिक और पुरातात्विक दोनों साक्ष्यों द्वारा समर्थित है।

2.1. शाब्दिक साक्ष्य: कीलाक्षर अभिलेख

मेसोपोटामिया के कीलाक्षर ग्रंथों में **मेलुहा** नामक भूमि का उल्लेख है, जिसे अब अधिकांश विद्वान सिंधु घाटी सभ्यता के रूप में स्वीकार करते हैं [28]। यह पहचान दोनों क्षेत्रों के बीच संबंधों को समझने की आधारशिला है।

- **अक्कद के सारगोन (लगभग 2334–2279 ईसा पूर्व):** उनके शिलालेख सबसे शुरुआती स्पष्ट संदर्भ प्रदान करते हैं, जिसमें वे दावा करते हैं कि मेलुहा, मागन और दिलमुन के जहाज उनकी राजधानी अक्कद के घाट पर लंगर डालते थे [24]। यह पाठ महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अक्कदी साम्राज्य और परिपक्व हड़प्पा काल की ऊंचाई के दौरान सीधे समुद्री संपर्क स्थापित करता है।
- **लगश के गुडिया (लगभग 21वीं सदी ईसा पूर्व):** उनके प्रसिद्ध मंदिर भजन (गुडिया सिलेंडर) विदेशी आयातों की एक विस्तृत सूची

प्रदान करते हैं। वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उन्होंने मेलुहा से "पारभासी कारेलियन" और विभिन्न विदेशी लकड़ियाँ (जैसे *मेस*-लकड़ी) प्राप्त कीं [24]। यह इन विशिष्ट सामग्रियों की पुरातात्विक खोजों की पुष्टि करता है। कुछ ग्रंथ मेलुहा से सोने की धूल और लाजवर्द का भी उल्लेख करते हैं [35]।

- **मेलुहा का प्रवासी समुदाय:** साक्ष्य मेसोपोटामिया में सिंधु लोगों की एक निवासी आबादी की ओर इशारा करते हैं।
  - **शु-इलिशु की सिलेंडर मुहर**, जो एक अक्कदी-काल के अधिकारी थे, स्पष्ट रूप से उन्हें "एमे-बाल मे-लुḫ-ḫए-की" या "मेलुहा भाषा का दुभाषिया" के रूप में नामित करती है [24]। यह एक भाषा अवरोध का निर्विवाद प्रमाण है जिसके लिए पेशेवर मध्यस्थों की आवश्यकता थी, जो निरंतर और जटिल अंतःक्रियाओं का संकेत देता है।
  - गिरसू/लगश से उर III के प्रशासनिक ग्रंथ एक **"मेलुहा गाँव" (é-duru₅ me-luh-ha)** का उल्लेख करते हैं, जिसे अब **गुअब्बा** की बस्ती से पहचाना गया है [38]। ये ग्रंथ दिखाते हैं कि मेलुहा के लोग सुमेरियन अर्थव्यवस्था में एकीकृत थे, कर चुकाते थे, भूमि के मालिक थे या किराए पर लेते थे, और कृषि और कपड़ा उद्योग में शामिल थे [32]। यह क्षणिक व्यापारियों से कहीं आगे की बात है।

"मेलुहा गाँव" का अस्तित्व केवल आने-जाने वाले जहाजों से अधिक का संकेत देता है। यह सिंधु लोगों की दूसरी या तीसरी पीढ़ी का सुझाव देता है जो मेसोपोटामिया समाज में पैदा हुए या पूरी तरह से एकीकृत हो गए थे। वे लंबी दूरी के व्यापार के अलावा स्थानीय कृषि और कपड़ा उत्पादन में भी शामिल थे। यह एक गहरी, बहु-पीढ़ी की उपस्थिति को इंगित करता है जहाँ आर्थिक भूमिकाओं में विविधता आने पर भी सांस्कृतिक पहचान ("मेलुहा") बनी रही। सारगोन के ग्रंथों में "मेलुहा से जहाजों" का उल्लेख प्रारंभिक अभियान व्यापार को इंगित करता है [29]। बाद में उर III के ग्रंथों में एक विशिष्ट, नामित गाँव का विवरण है, जिसके निवासी स्थानीय मेसोपोटामियाई अर्थव्यवस्था में शामिल हैं [38]। एक "दुभाषिए" की उपस्थिति इन दो चरणों के बीच एक सेतु का काम करती है—यह तब आवश्यक है जब संपर्क लगातार हो लेकिन आबादी अभी तक पूरी तरह से द्विभाषी न हो। इस प्रकार,
जहाजों के बारे में ग्रंथों से *गाँवों* के बारे में ग्रंथों में बदलाव पूरी तरह से बाहरी व्यापार संबंध से एक ऐसे संबंध में संक्रमण का सुझाव देता है जिसमें एक आंतरिक, बसा हुआ घटक था।

2.2. पुरातात्विक पदचिह्न: मेसोपोटामिया में सिंधु कलाकृतियाँ

पुरातात्विक रिकॉर्ड शाब्दिक साक्ष्यों की पुष्टि करता है, जो सिंधु मूल की कलाकृतियों की एक श्रृंखला प्रदान करता है जो मेसोपोटामिया के स्थलों पर पाई गई हैं।

- **ग्लाइप्टिक साक्ष्य (मुहरें):**
  - **क्लासिक सिंधु मुहरें:** सिंधु लिपि और पशु रूपांकनों (विशेषकर "एकश्रृंगी") के साथ तीस से अधिक वर्गाकार स्टेटाइट स्टाम्प मुहरें उर, किश और तेल अस्मार जैसे स्थलों पर पाई गई हैं [33]। उनका कार्य प्रशासनिक था, जिसका उपयोग संभवतः माल के बंडलों को सील करने, उनकी उत्पत्ति को प्रमाणित करने और यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता था कि उनके साथ छेड़छाड़ नहीं की गई है [7]।
  - **"खाड़ी-प्रकार" की मुहरें:** गोलाकार स्टाम्प मुहरें, कुछ सिंधु लिपि और रूपांकनों के साथ, लेकिन शैलीगत रूप से वर्गाकार मुहरों से भिन्न। ये खाड़ी में अधिक आम हैं लेकिन मेसोपोटामिया में भी पाई जाती हैं। उनका उद्भव एक संकर सांस्कृतिक विकास का सुझाव देता है, संभवतः हड़प्पा प्रवासियों द्वारा नए क्षेत्रीय मानदंडों के अनुकूल होने के कारण [40]।
  - **सिंधु प्रभाव वाली मेसोपोटामियाई सिलेंडर मुहरें:** कुछ सिलेंडर मुहरें, जो विशिष्ट मेसोपोटामियाई रूप हैं, सिंधु रूपांकनों के साथ पाई गई हैं (उदाहरण के लिए, सूसा से सिंधु लिपि के साथ एक लंबा भैंसा), जो कलात्मक परंपराओं के मिश्रण को दर्शाता है [33]।
- **प्रतिष्ठा की वस्तुएँ और कच्चा माल:**

- **नक़्क़ाशीदार कारेलियन मनके:** ये सिंधु शिल्प की एक पहचान हैं। मेसोपोटामिया में बड़ी मात्रा में पाए गए हैं, सबसे प्रसिद्ध रूप से **उर के शाही कब्रिस्तान (लगभग 2600-2450 ईसा पूर्व)** के अभिजात वर्ग की कब्रों में [34]। क्षारीय-नक़्क़ाशी की तकनीक एक सिंधु नवाचार थी [34]। मेसोपोटामिया में पाए गए कुछ मनकों पर सुमेरियन राजाओं जैसे शुल्गी द्वारा शिलालेख भी उत्कीर्ण किए गए थे, जो यह दर्शाता है कि वे अत्यधिक मूल्यवान आयात थे जिन्हें स्थानीय रूप से पुन: उपयोग किया गया था [34]। भू-रासायनिक विश्लेषण कारेलियन की भारतीय उत्पत्ति की पुष्टि करता है [45]।
- **लाजवर्द (Lapis Lazuli):** जबकि अंतिम स्रोत अफगानिस्तान (सर-ए-संग खदानें) है, मेसोपोटामिया के ग्रंथ अक्सर इसके आयात को मेलुहा से जोड़ते हैं [37]। शोरतुगई में हड़प्पा की बस्ती [1] इस व्यापार को नियंत्रित करने के लिए स्थित थी, यह सुझाव देते हुए कि सिंधु घाटी सभ्यता ने लाजवर्द को पश्चिम की ओर भेजने में एक प्रमुख मध्यस्थ के रूप में काम किया।
- **शंख और हाथीदांत:** *टर्बिनेला पाइरम* शंख से बनी वस्तुएं, जो भारतीय तट के लिए अद्वितीय एक प्रजाति है, मेसोपोटामिया के स्थलों पर पाई गई हैं, जो उनकी उत्पत्ति का एक स्पष्ट जैविक चिह्न प्रदान करती हैं [43]। हाथीदांत की वस्तुएं, जिनका ग्रंथों में भी उल्लेख है, संभवतः भारतीय हाथी से प्राप्त की गई थीं [33]।

- **सिंधु घाटी में मेसोपोटामियाई आयातों की कमी:** विषमता का एक महत्वपूर्ण बिंदु सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों में मेसोपोटामियाई कलाकृतियों की लगभग पूर्ण अनुपस्थिति है। मोहनजोदड़ो या लोथल में पाई गई कुछ सिलेंडर मुहरें दुर्लभ अपवाद हैं और एक महत्वपूर्ण मेसोपोटामियाई उपस्थिति का संकेत नहीं देती हैं [43]।

2.3. संश्लेषण: सिंधु-मेसोपोटामिया संबंध का निरूपण

साक्ष्य एक ऐसे संबंध की ओर इशारा करते हैं जिस पर हड़प्पा समुद्री उद्यम का प्रभुत्व था। हड़प्पावासी प्राथमिक एजेंट थे, जो अपने माल को मेसोपोटामिया तक पहुँचाते थे। व्यापार विलासिता की वस्तुओं (नक़्क़ाशीदार मनके, हाथीदांत) और कच्चे माल (कारेलियन, लकड़ी, लाजवर्द) पर केंद्रित था जो मेसोपोटामिया के अभिजात वर्ग द्वारा वांछित थे। एक मेलुहा प्रवासी समुदाय (दुभाषिए, ग्रामीण) की उपस्थिति एक सुस्थापित, दीर्घकालिक वाणिज्यिक संबंध का सुझाव देती है जिसके लिए रसद, अनुवाद और सांस्कृतिक दलाली का प्रबंधन करने के लिए एक स्थायी उपस्थिति की आवश्यकता थी।

भौतिक साक्ष्यों की विषमता केवल एक पुरातात्विक संयोग नहीं है, बल्कि सिंधु घाटी सभ्यता की आर्थिक आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक विचारधारा का प्रतिबिंब है। हड़प्पावासियों ने अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ (संभवतः ऊन या चाँदी जैसे खराब होने वाले सामान, जो पुरातात्विक रूप से नहीं बचते हैं, और शायद टिन) लीं, लेकिन उन्होंने महत्वपूर्ण मात्रा में मेसोपोटामिया की भौतिक संस्कृति का आयात नहीं किया। यह सुझाव देता है कि उनके समाज में विदेशी तैयार माल की बहुत कम मांग थी, उनके पास अपनी स्वयं की अत्यधिक विकसित और मानकीकृत शिल्प परंपराएं थीं जो आंतरिक जरूरतों को पूरा करती थीं और उनकी सांस्कृतिक पहचान को परिभाषित करती थीं। सिंधु घाटी सभ्यता में विदेशी वस्तुओं की कमी, उर के शाही कब्रों में सिंधु मनकों की प्रचुरता के विपरीत, मांग की कमी को दर्शाती है। इसलिए, सिंधु घाटी सभ्यता केवल "कम विकसित" या परिधीय नहीं थी; यह एक शक्तिशाली, आत्मनिर्भर आर्थिक और सांस्कृतिक प्रणाली थी जो अपनी शर्तों पर विदेशी व्यापार में लगी हुई थी - अपने स्वयं के उच्च-दर्जे के सामानों का निर्यात करते हुए विदेशी सामानों के आयात की आवश्यकता महसूस किए बिना। यह एक मजबूत सांस्कृतिक सामंजस्य और तकनीकी स्वतंत्रता की ओर इशारा करता है।

3. खाड़ी एक प्रवेश द्वार के रूप में: दिलमुन और मागन की मध्यस्थ भूमिकाएँ

फारस की खाड़ी सिंधु और मेसोपोटामिया के बीच एक महत्वपूर्ण समुद्री राजमार्ग के रूप में कार्य करती थी, जिसमें दिलमुन और मागन की स्थानीय राजव्यवस्थाएँ इस नेटवर्क में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।

3.1. मागन (ओमान): तांबे का एक स्रोत और सिंधु नाविकों के लिए एक केंद्र

मागन, जिसे लगातार ओमान प्रायद्वीप के साथ पहचाना जाता है, मेसोपोटामिया के लिए तांबे का एक प्रमुख स्रोत था, जैसा कि कीलाक्षर ग्रंथों में प्रलेखित है [23]। सिंधु सभ्यता ने भी ओमानी तांबे का आयात किया, जिससे यह एक महत्वपूर्ण रणनीतिक संसाधन बन गया [51]। ओमान के तट पर

रास अल-जिंज़ और **रास अल-हद्द** जैसे पुरातात्विक स्थलों ने एक गहरी सिंधु उपस्थिति के व्यापक प्रमाण दिए हैं। इन स्थलों पर बड़ी मात्रा में क्लासिक सिंधु काले-स्लिप्ड भंडारण जार पाए गए हैं, जिनका उपयोग संभवतः समुद्री मार्ग से माल परिवहन के लिए किया जाता था [51]। हाथीदांत की कंघी, सिंधु लिपि वाली एक तांबे की स्टाम्प मुहर, और कारेलियन मनके सहित अन्य सिंधु वस्तुएं भी मिली हैं [51]।

महत्वपूर्ण रूप से, विश्लेषण से पता चलता है कि सिंधु-शैली की कुछ कलाकृतियाँ, जिनमें मिट्टी के बर्तन और मुहरें शामिल हैं, स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करके ओमान में बनाई गई थीं [51]। यह, सिंधु खाना पकाने के बर्तनों के साक्ष्य के साथ, स्थानीय समुदायों में एकीकृत निवासी सिंधु व्यापारियों और शिल्पकारों की उपस्थिति का पुरजोर सुझाव देता है [54]। इसके अलावा, रास अल-जिंज़ में पाए गए बिटुमेन के ढेले पर सिले हुए तख्तों वाली नावों के पतवार और नरकट के बंडलों के निशान इस समुद्री व्यापार में उपयोग किए जाने वाले जहाजों के प्रकारों का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करते हैं [53]।

3.2. दिलमुन (बहरीन/फेलका): खाड़ी व्यापार का केंद्र

दिलमुन, जिसकी पहचान बहरीन और फेलका (आधुनिक कुवैत में) के द्वीपों और आस-पास के सऊदी तट के कुछ हिस्सों से की जाती है, खाड़ी व्यापार में एक प्रमुख मध्यस्थ के रूप में उभरा [22]। जबकि प्रारंभिक व्यापार (अक्कदी काल) अक्सर मेलुहा और मेसोपोटामिया के बीच सीधा होता था, इसिन-लारसा काल (प्रारंभिक दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व) तक, दिलमुन प्राथमिक मध्यस्थ बन गया था, एक एकाधिकारवादी केंद्र जहाँ मेसोपोटामिया और हड़प्पा के व्यापारी मिलते थे [22]।

दिलमुन की विशेषता एक विशिष्ट गोलाकार स्टाम्प मुहर है। इन "खाड़ी मुहरों" के शुरुआती संस्करणों में अक्सर सिंधु लिपि और रूपांकन होते हैं, लेकिन वे शैलीगत रूप से वर्गाकार हड़प्पा और बेलनाकार मेसोपोटामियाई मुहरों दोनों से अलग होते हैं [23]। यह सुझाव देता है कि उन्हें खाड़ी में हड़प्पा के प्रवासी समुदायों द्वारा विकसित किया गया था, जिससे एक नए वाणिज्यिक वातावरण के लिए एक नया प्रशासनिक उपकरण बनाया गया। सिंधु वजन प्रणाली को अपनाना वाणिज्यिक एकीकरण की गहराई के लिए सबसे मजबूत सबूतों में से एक है। बहरीन और फेलका में मानकीकृत सिंधु प्रणाली के अनुरूप घनाकार चर्ट वजन की खोज से पता चलता है कि हड़प्पा की माप विज्ञान प्रणाली खाड़ी में वाणिज्य के लिए सामान्य भाषा बन गई [23]। पुरातात्विक खोजों में फेलका और बहरीन में सिंधु कलाकृतियाँ, जैसे कारेलियन मनके और मिट्टी के बर्तन शामिल हैं [23]। इसके विपरीत, सिंधु बंदरगाह शहर लोथल में एक "फारस की खाड़ी" मुहर मिली, जो विपरीत संपर्क का एक दुर्लभ प्रमाण प्रदान करती है [49]।

3.3. खाड़ी व्यापार की प्रकृति

खाड़ी केवल एक पारगमन क्षेत्र नहीं थी, बल्कि एक "तीसरा स्थान" थी जहाँ हड़प्पा और स्थानीय तत्वों से एक नई, संकर "खाड़ी संस्कृति" गढ़ी गई थी। यह प्रक्रिया साधारण व्यापार से कहीं अधिक गहरी है। खाड़ी मुहर का विकास और सिंधु भार का अपनाया जाना केवल व्यावहारिक विकल्प नहीं थे; वे इस क्षेत्र में काम कर रहे बहुसांस्कृतिक व्यापारी समुदायों के लिए एक नई, साझा प्रशासनिक और आर्थिक पहचान के निर्माण का प्रतिनिधित्व करते हैं। ओमान में हड़प्पावासी केवल गुजर नहीं रहे थे; वे वहाँ रह रहे थे और अपने माल के स्थानीय संस्करणों का उत्पादन कर रहे थे [51]। दिलमुन में, उन्होंने केवल अपनी वर्गाकार मुहरों का उपयोग नहीं किया; एक नया गोलाकार प्रकार उभरा, जिसमें सिंधु और स्थानीय विशेषताओं का मिश्रण था [40]। दिलमुनवासियों ने अपनी स्वयं की वजन प्रणाली नहीं बनाई; उन्होंने हड़प्पा प्रणाली को पूरी तरह

से अपना लिया [58]। ये अलग-अलग समूहों द्वारा केवल माल के आदान-प्रदान की क्रियाएं नहीं हैं। वे वाणिज्य की एक नई, साझा संस्कृति के निर्माण खंड हैं। खाड़ी एक पिघलने वाले बर्तन बन गई जहाँ हड़प्पा प्रौद्योगिकी और प्रशासनिक प्रथाएं स्थानीय परंपराओं के साथ विलीन हो गईं ताकि लंबी दूरी के समुद्री व्यापार की जरूरतों के अनुरूप एक अनूठी प्रणाली बनाई जा सके।

4. उत्तरी सीमा: बैक्ट्रिया-मारजियाना पुरातात्विक परिसर (BMAC) के साथ अंतःक्रिया

सिंधु घाटी सभ्यता के उत्तरी पड़ोसियों के साथ संबंध मेसोपोटामिया के साथ उसके समुद्री संबंधों से एक अलग गतिशीलता प्रस्तुत करते हैं। यह अंतःक्रिया भूमि-आधारित थी और इसमें प्रत्यक्ष उपनिवेशीकरण और अधिक पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों शामिल थे।

4.1. शोरतुगई में सिंधु चौकी

उत्तरी अफगानिस्तान में ऑक्सस नदी (अमू दरिया) पर स्थित, शोरतुगई को स्पष्ट रूप से एक परिपक्व हड़प्पा व्यापारिक उपनिवेश के रूप में पहचाना जाता है [1]। इसका रणनीतिक स्थान स्पष्ट रूप से बदख्शां की समृद्ध लाजवर्द खदानों और संभवतः मध्य एशिया के टिन संसाधनों तक पहुंच को नियंत्रित करने के लिए था [46]। शोरतुगई की भौतिक संस्कृति भारी रूप से हड़प्पा की है, जिसमें क्लासिक मिट्टी के बर्तनों के प्रकार (छिद्रित जार, काले-पर-लाल बर्तन), मानक 1:2:4 अनुपात के साथ पकी हुई ईंटें, एक गैंडे के रूपांकन और सिंधु लिपि के साथ एक वर्गाकार मुहर, और हड़प्पा शिल्प गतिविधियों के प्रमाण शामिल हैं [47]। लाजवर्द के टुकड़ों, क्रूसिबल और कांस्य लावा सहित औद्योगिक मलबे की उपस्थिति, सिंधु के हृदय क्षेत्र में दक्षिण की ओर शिपमेंट से पहले कच्चे माल के प्रसंस्करण केंद्र के रूप में इसके कार्य की पुष्टि करती है [62]।

4.2. नखलिस्तानों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान: BMAC में सिंधु

प्रमुख BMAC केंद्रों पर सिंधु और सिंधु-शैली की कलाकृतियाँ पाई गई हैं, जो महत्वपूर्ण अंतःक्रिया का संकेत देती हैं।

- **गोनुर देपे (तुर्कमेनिस्तान) में:** खुदाई में एक हाथी और सिंधु लिपि के साथ एक हड़प्पा मुहर, कई हाथीदांत की वस्तुएं (पासे, गेमिंग स्टिक्स), और छिद्रित जार जैसे हड़प्पा के समानांतर मिट्टी के बर्तन मिले हैं [20]।
- **अल्तिन देपे (तुर्कमेनिस्तान) में:** दो प्रांतीय-शैली की सिंधु मुहरें और हाथीदांत की वस्तुएं मिलीं, जो संपर्क का प्रारंभिक प्रमाण प्रदान करती हैं [20]।
- **सामान्य खोजें:** नक़्क़ाशीदार कारेलियन मनके और सिंधु मूल की अन्य वस्तुएं BMAC क्षेत्र में पाई जाती हैं, जो विलासिता की वस्तुओं के व्यापार को रेखांकित करती हैं [21]।

4.3. विपरीत प्रवाह: सिंधु क्षेत्र में BMAC

मेसोपोटामिया में माल के एकतरफा प्रवाह के विपरीत, BMAC के साथ संबंध अधिक द्विदिश था। BMAC कलाकृतियाँ, विशेष रूप से विशिष्ट धातु के काम और मिट्टी के बर्तन, सिंधु घाटी और बलूचिस्तान में पाए गए हैं [20]। पाकिस्तान में मेहरगढ़ के पास

सिब्री स्थल को एक BMAC बस्ती के रूप में पहचाना जाता है, यह दर्शाता है कि ऑक्सस सभ्यता के लोग सिंधु क्षेत्र के भीतर यात्रा करते थे और रहते थे [63]।

क्वेटा में एक BMAC व्यक्ति की कब्र जनसंख्या आंदोलन का और सबूत प्रदान करती है [63]। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि मोहनजोदड़ो की कुछ मूर्तियां, जैसे प्रसिद्ध "पुजारी-राजा", BMAC से शैलीगत प्रभाव दिखाती हैं, संभवतः यह दर्शाता है कि वे मध्य एशियाई मूल के लोगों के लिए या उनके द्वारा बनाई गई थीं [68]।

4.4. सिंधु-BMAC संबंध को परिभाषित करना

सिंधु घाटी सभ्यता ने विभिन्न अंतःक्रिया क्षेत्रों के लिए अलग-अलग रणनीतियाँ अपनाईं। BMAC के साथ संबंध, जिसकी विशेषता एक औपनिवेशिक चौकी (शोरतुगई) और पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान थी, मेसोपोटामिया के साथ समुद्री, निर्यात-संचालित संबंध से बिल्कुल अलग है। यह एक अखंड "व्यापार" दृष्टिकोण के बजाय एक परिष्कृत और अनुकूलनीय विदेश नीति को प्रदर्शित करता है। मेसोपोटामियाई रणनीति में तैयार लक्जरी सामानों का समुद्री निर्यात और एक बड़ी, शक्तिशाली सभ्यता के भीतर एक व्यापारी प्रवासी की स्थापना शामिल थी, जिसका लक्ष्य वाणिज्यिक आदान-प्रदान था [33]। इसके विपरीत, BMAC रणनीति में एक कम शहरीकृत क्षेत्र में एक पूर्ण उपनिवेश (शोरतुगई) की स्थापना शामिल थी, जिसका लक्ष्य विशिष्ट, रणनीतिक कच्चे माल (लाजवर्द, टिन) का सीधा नियंत्रण और निष्कर्षण था [47]। मेसोपोटामियाई आदान-प्रदान भौतिक संस्कृति में अत्यधिक विषम था, जबकि BMAC आदान-प्रदान अधिक द्विदिश था, जिसमें BMAC लोग और कलाकृतियाँ सिंधु क्षेत्र में दिखाई देती थीं [20]। यह इंगित करता है कि सिंधु घाटी सभ्यता केवल एक "व्यापारिक" सभ्यता नहीं थी; यह एक ऐसी राजव्यवस्था थी जो संदर्भ के आधार पर विभिन्न तरीकों से शक्ति और प्रभाव डाल सकती थी। यह एक सहकर्मी राजव्यवस्था (मेसोपोटामिया) के लिए एक वाणिज्यिक भागीदार के रूप में और एक संसाधन-समृद्ध, कम केंद्रीकृत क्षेत्र (BMAC की परिधि) में एक उपनिवेशीकरण शक्ति के रूप में कार्य कर सकती थी। आनुवंशिक अध्ययनों ने भी जनसंख्या आंदोलनों की ओर इशारा किया है, मुख्य रूप से सिंधु परिधि से BMAC में, जो एक IVC व्यापारिक उपस्थिति के पुरातात्विक साक्ष्य के अनुरूप है [69]।

5. दूर की गूँज: मिस्र के साथ अप्रत्यक्ष संबंध

सिंधु घाटी सभ्यता और मिस्र के पुराने साम्राज्य के बीच सीधे संपर्क का कोई पुरातात्विक या शाब्दिक प्रमाण नहीं है। जो भी संबंध मौजूद थे, वे अप्रत्यक्ष थे, जो मेसोपोटामिया और लेवेंट में फैले व्यापक व्यापार नेटवर्क द्वारा मध्यस्थ थे।

प्राथमिक साक्ष्य उन वस्तुओं से मिलता है जो संभवतः मेसोपोटामिया के माध्यम से पारगमन की गई थीं। **लाजवर्द**, जो अंततः अफगानिस्तान से आता था और सिंधु घाटी सभ्यता और मेसोपोटामिया के माध्यम से व्यापार किया जाता था, मिस्र में अत्यधिक मूल्यवान था और नक़ादा II काल से ही इसका उपयोग किया जाता था [33]। इसी तरह, मिस्र में सिंधु-शैली के नक़्क़ाशीदार कारेलियन मनकों के कुछ दुर्लभ उदाहरण पाए गए हैं, जो संभवतः मेसोपोटामियाई व्यापार नेटवर्क के माध्यम से पहुंचे थे [34]। इन वस्तुओं की उपस्थिति सिंधु घाटी और मिस्र के बीच एक साझा सामग्री की दुनिया का संकेत देती है, लेकिन यह सीधे संपर्क का प्रमाण नहीं है। यह "डाउन-द-लाइन" व्यापार का एक क्लासिक उदाहरण है, जहाँ माल कई मध्यस्थों से होकर गुजरता है, और मूल उत्पादक और अंतिम उपभोक्ता के बीच कोई सीधा संपर्क नहीं होता है।

6. संश्लेषण और निष्कर्ष: सिंधु सभ्यता अपने वैश्विक संदर्भ में

सिंधु घाटी सभ्यता के विदेशी संबंधों का विश्लेषण एक जटिल, बहुआयामी तस्वीर पेश करता है जो "व्यापार" के एक अखंड मॉडल को चुनौती देता है। हड़प्पावासी अलग-थलग नहीं थे, बल्कि कांस्य युग की दुनिया में सक्रिय भागीदार थे, जो विभिन्न समकालीन समाजों के साथ जुड़ने के लिए विविध रणनीतियों का उपयोग करते थे।

6.1. संपर्क की प्रकृति का पुनर्मूल्यांकन: एक बहु-स्तरीय ढाँचा

सिंधु घाटी सभ्यता के विदेशी संबंध एक साथ कई स्तरों पर संचालित होते थे, जो एक परिष्कृत और अनुकूलनीय दृष्टिकोण को दर्शाते हैं:

- **उपनिवेशवाद/संसाधन निष्कर्षण:** शोरतुगई चौकी मध्य एशिया से लाजवर्द और टिन जैसे रणनीतिक संसाधनों तक सीधी पहुंच और नियंत्रण को सुरक्षित करने के लिए एक जानबूझकर किए गए औपनिवेशिक प्रयास का प्रतिनिधित्व करती है [47]।

- **एकीकृत समुद्री व्यापार:** मागन (ओमान) में गहरी उपस्थिति, जहाँ हड़प्पा के शिल्पकार स्थानीय रूप से सिंधु-शैली के सामान का उत्पादन कर रहे थे, एक साधारण बंदरगाह से परे एक संबंध का सुझाव देता है, जो एक एकीकृत आर्थिक क्षेत्र की ओर इशारा करता है [51]।
- **प्रवासी व्यापारी समुदाय:** मेसोपोटामिया में "मेलुहा गाँव" और दुभाषियों का अस्तित्व एक स्थायी, बसे हुए प्रवासी समुदाय को इंगित करता है जो स्थानीय समाज में एकीकृत हो गया था, जो केवल क्षणिक व्यापार से परे एक दीर्घकालिक वाणिज्यिक प्रतिबद्धता का संकेत देता है [33]।
- **मध्यस्थ-आधारित व्यापार:** दिलमुन के माध्यम से बाद की प्रणाली का उदय एक विकसित व्यापार नेटवर्क को दर्शाता है जो दक्षता और जोखिम प्रबंधन के लिए एक केंद्रीयकृत केंद्र पर निर्भर था [23]।
- **पारस्परिक सहकर्मी-राजव्यवस्था अंत:क्रिया:** BMAC के साथ द्विदिश आदान-प्रदान एक अधिक समान संबंध का सुझाव देता है, जो संभवतः भूमि-आधारित निकटता और साझा सांस्कृतिक प्रभावों से प्रेरित था [64]।

तालिका 2: क्षेत्र द्वारा सिंधु-संबंधित कलाकृतियों और अंत:क्रिया प्रकारों का सारांश

क्षेत्र/स्थल	प्रमुख सिंधु कलाकृतियाँ मिलीं	IVC में विदेशी उपस्थिति के साक्ष्य	अंत:क्रिया की अनुमानित प्रकृति
मेसोपोटामिया (उर, किश)	वर्गाकार मुहरें, नक़्क़ाशीदार कारेलियन मनके, हाथीदांत, *टर्बिनेला पाइरम* शंख	न्यूनतम (कुछ सिलेंडर मुहरें)	समुद्री निर्यात / प्रवासी समुदाय
मागन (रास अल-जिंज़)	भंडारण जार, सिंधु लिपि, तांबे की मुहर, हाथीदांत की कंघी, कारेलियन मनके	लागू नहीं (IVC उपस्थिति)	एकीकृत केंद्र / स्थानीय उत्पादन
दिलमुन (बहरीन, फेलका)	खाड़ी मुहरें (सिंधु लिपि के साथ), सिंधु वजन, कारेलियन मनके	न्यूनतम (एक खाड़ी मुहर)	मध्यस्थ व्यापार / संकर संस्कृति
BMAC (गोनुर देपे)	हाथीदांत की वस्तुएं, सिंधु मुहरें, मिट्टी के बर्तन	वर्तमान (BMAC कलाकृतियाँ/बस्ती)	पारस्परिक आदान-प्रदान
शोरतुगई	क्लासिक हड़प्पा सामग्री (मुहर, मिट्टी के बर्तन, ईंटें), लाजवर्द का मलबा	लागू नहीं (IVC उपनिवेश)	संसाधन उपनिवेश

6.2. साक्ष्य की विषमता और हड़प्पा की विशिष्टता

सबसे आकर्षक पैटर्न में से एक सिंधु निर्यातों की प्रचुरता और सिंधु घाटी में विदेशी आयातों की कमी के बीच स्पष्ट विषमता है [43]। यह एक अत्यधिक आत्मनिर्भर सभ्यता का सुझाव देता है जिसमें एक शक्तिशाली और सुसंगत सांस्कृतिक विचारधारा थी। ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पावासियों ने विदेशी भौतिक संस्कृति को उसी तरह महत्व नहीं दिया जिस तरह उनके समकालीनों ने हड़प्पा के सामान को महत्व दिया।

यह उन पुराने मॉडलों को चुनौती देता है जो सिंधु घाटी सभ्यता को मेसोपोटामियाई कोर की परिधि के रूप में देख सकते हैं। इसके बजाय, सिंधु घाटी सभ्यता अपने आप में एक स्वतंत्र कोर के रूप में उभरती है, जो विनिमय नेटवर्क के अपने पक्ष को चलाती और नियंत्रित करती है।

6.3. अनुत्तरित प्रश्न और भविष्य के अनुसंधान निर्देश

सिंधु घाटी सभ्यता के वैश्विक संबंधों के बारे में हमारा ज्ञान काफी बढ़ गया है, लेकिन महत्वपूर्ण प्रश्न बने हुए हैं।

- **अपठित लिपि:** गहरी समझ के लिए सबसे बड़ी बाधा सिंधु लिपि का अपठित रहना है। इसके गूढ़ार्थ को खोलने से उनकी अपनी भूमि का नाम, उनके व्यापारिक भागीदारों के नाम, वे जिन वस्तुओं की तलाश करते थे, और उनके राजनीतिक और आर्थिक संगठन की प्रकृति का पता चल सकता है [6]।
- **"मेलुहा" पहचान:** क्या मेसोपोटामिया में "मेलुहा" एक स्थिर जातीय लेबल था, या यह पीढ़ियों से विकसित हुआ क्योंकि प्रवासी समुदाय सुमेरियन समाज में एकीकृत हो गया? [32]।
- **नाशवान वस्तुओं की भूमिका:** पुरातात्विक रिकॉर्ड टिकाऊ वस्तुओं (पत्थर, सिरेमिक, धातु) के प्रति पक्षपाती है। कपड़ा, तेल और अनाज जैसे नाशवान वस्तुओं में व्यापार, हालांकि कुछ ग्रंथों में उल्लेख किया गया है [23], पुरातात्विक रूप से अदृश्य है और व्यापार की कथित विषमता को संतुलित कर सकता है।
- **भविष्य का अनुसंधान:** धातुओं और पत्थरों के समस्थानिक और भू-रासायनिक सोर्सिंग जैसी वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके निरंतर तुलनात्मक विश्लेषण, इन प्राचीन नेटवर्कों की हमारी समझ को परिष्कृत करने के लिए सर्वोपरि है [45]।

अंततः, साक्ष्य सिंधु घाटी सभ्यता को एक परिष्कृत, उद्यमशील और सांस्कृतिक रूप से आत्मविश्वासी समाज के रूप में चित्रित करते हैं जो कांस्य युग की दुनिया के साथ अपनी शर्तों पर जुड़ा हुआ था। यह एक ऐसा केंद्र था जिसने न केवल भाग लिया, बल्कि अपने समय के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क को आकार देने में भी मदद की।

Works cited

1. Indus Valley Civilisation - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Indus_Valley_Civilisation
2. Bronze Age - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Bronze_Age
3. THE INDUS VALLEY CIVILIZATION: FEATURES OF URBAN PLAN - Granthaalayah Publications and Printers, accessed July 29, 2025, https://www.granthaalayahpublication.org/Arts-Journal/ShodhKosh/article/download/3371/3059/19973
4. The Indus Valley civilization Urban Planning and social ... - IJMR, accessed July 29, 2025, https://ijmr.net.in/current/2024/Nov/fmR8AZ4ANGzY8jj.pdf
5. (PDF) THE INDUS VALLEY CIVILIZATION: FEATURES OF URBAN PLAN - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/387451582_THE_INDUS_VALLEY_CIVILIZATION_FEATURES_OF_URBAN_PLAN
6. The Indus Valley Civilisation: 3000 BC to 1600 BC - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/374732750_The_Indus_Valley_Civilisation_3000_BC_to_1600_BC
7. Bricks, Beads and Bones - NCERT, accessed July 29, 2025, https://ncert.nic.in/textbook/pdf/lehs101.pdf
8. Indus civilization - Craft, Technology, Artifacts | Britannica, accessed July 29, 2025,

https://www.britannica.com/topic/Indus-civilization/Craft-technology-and-artifacts
9. HARAPPAN CIVILIZATION, accessed July 29, 2025, https://www.lkouniv.ac.in/site/writereaddata/siteContent/202003241550006972anil_kumar_HARAPPAN_CIVILIZATION%201.pdf
10. Chronology of Mesopotamia during the third millennium BCE. - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/figure/Chronology-of-Mesopotamia-during-the-third-millennium-BCE_tbl1_362558151
11. Abraham and the Chronology of Ancient Mesopotamia | Answers Research Journal, accessed July 29, 2025, https://answersresearchjournal.org/abraham-chronology-ancient-mesopotamia/
12. QUESTIONING THE OXUS CIVILIZATION OR BACTRIA- MARGIANA ARCHAEOLOGICAL CULTURE (BMAC) An overview - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/374387130_QUESTIONING_THE_OXUS_CIVILIZATION_OR_BACTRIA-_MARGIANA_ARCHAEOLOGICAL_CULTURE_BMAC_An_overview
13. Chronology of Mesopotamia | PDF | Social Science | History - Scribd, accessed July 29, 2025, https://www.scribd.com/doc/302675538/Chronology-of-Mesopotamia
14. (PDF) The Lost Months of Ur: New Early Dynastic and Sargonic Tablets from the British Museum - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/337632825_The_Lost_Months_of_Ur_New_Early_Dynastic_and_Sargonic_Tablets_from_the_British_Museum
15. Timeline: First Intermediate Period of Egypt - World History Encyclopedia, accessed July 29, 2025, https://www.worldhistory.org/timeline/First_Intermediate_Period_of_Egypt/
16. Ancient Egyptian chronology and historical framework (article) | Khan Academy, accessed July 29, 2025, https://www.khanacademy.org/humanities/ancient-art-civilizations/egypt-art/beginners-guide-egypt/a/ancient-egyptian-chronology-and-historical-framework
17. First Intermediate Period of Egypt - World History Encyclopedia, accessed July 29, 2025, https://www.worldhistory.org/First_Intermediate_Period_of_Egypt/
18. Ancient Egypt - The Old Kingdom (c. 2543–c. 2120 bce) and the First Intermediate period (c. 2118–c. 1980 bce) | Britannica, accessed July 29, 2025, https://www.britannica.com/place/ancient-Egypt/The-Old-Kingdom-c-2543-c-2120-bce-and-the-First-Intermediate-period-c-2118-c-1980-bce
19. Timeline of Ancient Egypt - Institute of Egyptian Art & Archaeology - The University of Memphis, accessed July 29, 2025, https://www.memphis.edu/egypt/resources/timeline.php
20. Bactria–Margiana Archaeological Complex - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Bactria%E2%80%93Margiana_Archaeological_Complex
21. The Bactria-Margiana Archaeological Complex (BMAC) - Fabrizio ..., accessed July 29, 2025, https://www.fabriziomusacchio.com/weekend_stories/told/2025/2025-01-02-bmac/
22. Dilmun: Ancient Polity of Modern Bahrain, Kuwait, Qatar, and Saudi ..., accessed July 29, 2025, https://brewminate.com/dilmun-ancient-polity-of-modern-bahrain-kuwait-qatar-and-saudi-arabia/
23. Dilmun - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Dilmun
24. Full article: Black Land, May Your Trees Be Great Trees! The Forest Goods Trade from Meluhha to Mesopotamia in the Third Millennium BCE: A Multi-Perspective Approach, accessed July 29, 2025, https://www.tandfonline.com/doi/full/10.1080/00856401.2025.2488137?src=
25. TRADE AND TRADERS OF MESOPOTAMIAN UR - ASBBS.org, accessed July 29, 2025, http://asbbs.org/files/ASBBS2012V1/PDF/A/AlexanderW.pdf

26. Mesopotamia: The World's Earliest Civilization (The Britannica Guide to Ancient Civilizations) - Siam Costumes, accessed July 29, 2025, https://www.siamcostumes.com/cutters_guides/pdf/mesopotamia-the-worlds-earliest-civilization-kathleen-kuiper.pdf
27. Timeline of ancient Egypt | British Museum, accessed July 29, 2025, https://www.britishmuseum.org/learn/schools/ages-7-11/ancient-egypt/timeline-ancient-egypt
28. meluhha and agastya : alpha and omega of the indus script - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/pdf/meluhha_and_agastya_2009.pdf
29. THE ANCIENT MESOPOTAMIAN PLACE NAME "meluḫḫa" - Journal.fi, accessed July 29, 2025, https://journal.fi/store/article/view/51787/16150
30. (PDF) Indus Valley Civilization (Reading) - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/384051488_Indus_Valley_Civilization_Reading
31. TVA_BOK_0018781_Decipherm, accessed July 29, 2025, https://www.tamildigitallibrary.in/admin/assets/book/TVA_BOK_0018781_Decipherment_of_the_proto_Dravidian.pdf
32. THE MELAMMU PROJECT - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/201402/Vidale-Indus-Mesopotamia.pdf
33. Indo-Mesopotamia relations - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Indo-Mesopotamia_relations
34. Etched carnelian beads - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Etched_carnelian_beads
35. Meluhha - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Meluhha
36. The Temple of Ningirsu from Its Origins to the Present Day - Eisenbrauns, accessed July 29, 2025, https://www.eisenbrauns.org/sample_chapter/Rey_Chapter1.pdf
37. EXPLORING THE MESOPOTAMIAN TRADE (C.6000-539 BCE): TYPES, ORGANIZATION, AND EXPANSION - PalArch's Journals, accessed July 29, 2025, https://archives.palarch.nl/index.php/jae/article/download/11691/10333
38. (PDF) Guabba, the Meluhhan Village in Mesopotamia - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/266088198_Guabba_the_Meluhhan_Village_in_Mesopotamia
39. (PDF) Historical Review of Mohenjo-Daro and Harappan Civilization in Pakistan, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/361714533_Historical_Review_of_Mohenjo-Daro_and_Harappan_Civilization_in_Pakistan
40. The westward transmission of Indus Valley sealing ... - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/pdf/The_westward_transmission_of_Indus_Valle.pdf
41. The Indus Civilization and Dilmun, the Sumerian Paradise Land - Penn Museum, accessed July 29, 2025, https://www.penn.museum/sites/expedition/the-indus-civilization-and-dilmun-the-sumerian-paradise-land/
42. Carnelian Beads - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/slide/carnelian-beads
43. Indus and Mesopotamian Trade Networks: New Insights from Shell ..., accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/content/indus-and-mesopotamian-trade-networks-new-insights-shell-and-carnelian-artifacts
44. Etching carnelian beads: understanding and reproducing an ancestral technique, accessed July 29,

2025, https://www.britishmuseum.org/blog/etching-carnelian-beads-understanding-and-reproducing-ancestral-technique
45. Sourcing carnelian beads from the ancient Mesopotamian site of Kish, Iraq, 2450–2200 BCE: Stylistic, technological and geochemical approaches - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/392142334_Sourcing_carnelian_beads_from_the_ancient_Mesopotamian_site_of_Kish_Iraq_2450-2200_BCE_Stylistic_technological_and_geochemical_approaches
46. Lapis lazuli - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Lapis_lazuli
47. Shortugai_ a Harappan Lapis-Lazuli Outpost - Scribd, accessed July 29, 2025, https://www.scribd.com/document/862035008/Shortugai-a-Harappan-Lapis-Lazuli-Outpost
48. (PDF) Lothal Sealings: Records from an Indus Civilization Town at ..., accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/323548393_Lothal_Sealings_Records_from_an_Indus_Civilization_Town_at_the_Eastern_End_of_the_Maritime_Trade_Networks_across_the_Arabian_Sea
49. Indus-Mesopotamian trade: The record in the Indus - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/292484171_Indus-Mesopotamian_trade_The_record_in_the_Indus
50. Dynamics of Trade in the Ancient Mesopotamian "World System" - ResearchGate, accessed July 29, 2025, https://www.researchgate.net/publication/227666921_Dynamics_of_Trade_in_the_Ancient_Mesopotamian_World_System
51. The Indus Civilization Trade with the Oman Peninsula - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/pdf/The_Indus_Civilization_Trade_with_the_Om.pdf
52. Ras al Had Turtle Reserve and the Heritage Site of Ras al Jinz ..., accessed July 29, 2025, https://whc.unesco.org/en/tentativelists/5840/
53. Ras al-Jinz - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Ras_al-Jinz
54. New excavations at the Umm an-Nar site Ras al-Hadd HD-1, Sultanate of Oman (seasons 2016–2018): insights on cultural... - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/content/new-excavations-umm-nar-site-ras-al-hadd-hd-1-sultanate-oman-seasons-2016%E2%80%932018-insights
55. Archaeological Findings - collections, accessed July 29, 2025, https://www.nm.gov.om/en/collection/gift/archaeological-findings
56. Was the trade relationship between the Harappans and the Mesopotamians a direct one?, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/answers/was-trade-relationship-between-harappans-and-mesopotamians-direct-one
57. Insight 89: Failaka Island:Unearthing the Past in Kuwait - NUS – Middle East Institute, accessed July 29, 2025, https://mei.nus.edu.sg/publication/insight-89-failaka-islandunearthing-the-past-in-kuwait/
58. The Indus-Mesopotamia Relationship Reconsidered - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/content/indus-mesopotamia-relationship-reconsidered
59. "Symbols of Dilmun's royal house – a primitive system of communication adopted from the late Indus world?" ("(PDF) Symbols of Dilmun's royal house – a primitive system of ...") - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/pdf/Laursen-2016-Arabian_Archaeology_and_Epigraphy.pdf
60. 3,500-Year-Old Gemstones from Kuwait Shed Light on One of the Oldest Civilizations in the Middle

East | Ancient Origins, accessed July 29, 2025, https://www.ancient-origins.net/news-history-archaeology/3500-year-old-gemstones-kuwait-shed-light-one-oldest-civilizations-middle-021192
61. Beads, pendants and other ornaments from late 3rd-2nd millennium BC occupation on Failaka, Kuwait, accessed July 29, 2025, https://pcma.uw.edu.pl/wp-content/uploads/pam/PAM_2011_XXIII_2/PAM_23_2_Andersson.pdf
62. Untitled - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/sites/default/files/pdf/shortugai-afghanistan.pdf
63. The Middle Asian Interaction Sphere - Penn Museum, accessed July 29, 2025, https://www.penn.museum/documents/publications/expedition/49-1/Research%20Notes.pdf
64. Expedition Magazine | The Middle Asian Interaction Sphere, accessed July 29, 2025, https://www.penn.museum/sites/expedition/the-middle-asian-interaction-sphere/
65. Prehistoric Contacts between Central Asia and India - Harappa, accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/content/prehistoric-contacts-between-central-asia-and-india
66. Gonur Depe - City of Kings and Gods, and the Capital of Margush ..., accessed July 29, 2025, https://www.harappa.com/content/gonur-depe-city-kings-and-gods-and-capital-margush-country-modern-turkmenistan
67. Gonur Depe - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Gonur_Depe
68. Priest-King (sculpture) - Wikipedia, accessed July 29, 2025, https://en.wikipedia.org/wiki/Priest-King_(sculpture)
69. The Formation of Human Populations in South and Central Asia - PMC, accessed July 29, 2025, https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC6822619/